मेट देती दवा दर्द तलवार का | By Mukesh Bagda |

तोल ज़रा ए मेरे साथी
मुखड़ा पीछे खोल रे
मिश्री सी बन के कान में
तू प्यारे अमृत घोल रे

मेट देती दवा दर्द तलवार का
घाव बोली का फिर भी न भरता कभी
हाथ की चोट को भूल जाए कोई
बात की चोट को भूल सकता नहीं

पूत अंधे का जब द्रौपदी ने कहा
कौरवों के दिलों में कटारी लगी
सबके होते हुए चीर जब वो हारे
उस सभा में पंचाली बेचारी लगी

लाज रखी थी आ कर के घनश्याम ने
पाँच पतियों की नारी अभागन बनी

मेट देती दवा दर्द तलवार का
घाव बोली का फिर भी न भरता कभी
हाथ की चोट को भूल जाए कोई
बात की चोट को भूल सकता नहीं

पाँच नंदी के संग में गौ थी खड़ी
मैय्या गिरिजा ने हँस कर के ताना दिया
शाप दे डाला गिरिजा को गौ माता ने
क्यूँ हँसे होंगे तेरे भी पाँच पिया

बात सच्ची हुई गिरिजा बनी द्रौपदी
पाँच पांडव की द्वापर में रानी बनी

मेट देती दवा दर्द तलवार का
घाव बोली का फिर भी न भरता कभी
हाथ की चोट को भूल जाए कोई
बात की चोट को भूल सकता नहीं

बात कड़वी कभी मुख से बोलो नहीं
बात जैसी न दूजी कोई मार है
रात दिन जिसकी पीड़ा सताती रहे
एक ऐसी दुधारी वो तलवार है

हरष कहने के पहले ही तोल ज़रा
मुख से निकला दुबारा तो आता नहीं

मेट देती दवा दर्द तलवार का
घाव बोली का फिर भी न भरता कभी
हाथ की चोट को भूल जाए कोई
बात की चोट को भूल सकता नहीं

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ae%e0%a5%87%e0%a4%9f-%e0%a4%a6%e0%a5%87%e0%a4%a4%e0%a5%80-%e0%a4%a6%e0%a4%b5%e0%a4%be-%e0%a4%a6%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%a6-%e0%a4%a4%e0%a4%b2%e0%a4%b5%e0%a4%be%e0%a4%b0-%e0%a4%95%e0%a4%be-by/